महात्मा गाँधी के चिन्तन को प्रभावित करने वाले तत्व

मेहराब खाँ

सहायक–आचार्य–राजनीति विज्ञान
एस.बी.के. राजकीय महाविद्यालय जैसलमेर

महात्मा गाँधी शुद्ध राजनीतिक विचारक न होकर व्यावहारिक पुरूष थे। वे वर्तमान भारत के राष्ट्र निर्माता थे। भारतवासी उन्हें राष्ट्रपिता अथवा बापू के नाम से याद करते है। उनके ऊँचे चरित्र और धार्मिक रूझान को देखकर कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा के नाम से संबोधित किया और अब भी वे महात्मा गाँधी के नाम से लाकप्रिय हैं। राजनीति को उन्होंने विषाल धार्मिक और नैतिक लक्ष्य की सिद्धि के लिए अपनाया। अपनी आत्म कथा सत्य के प्रयोग में उन्होने अपने जीवन के अनुभवों को निष्छल रूप से व्यक्त किया। उनके विचार अनेक पुस्तकों, लेखों और प्रवचनों आदि के रूप में बिखरे हुए हैं। उन्होंने किसी नये वाद का सूत्रपात नहीं किया और स्वयं भी यह स्वीकार किया कि गाँधीवाद नाम की किसी वस्तु का कोई अस्तित्व नहीं है। सत्य और अंहिसा के आदर्ष उनकी विचारधारा के मूलमंत्र थे। उन्होंने आधुनिक चिन्तन पर पर्याप्त प्रभाव डाला।

गाँधी के व्यक्तित्व और चिन्तन पर प्रभाव

गाँधी का व्यक्तित्व और विचार, उन पर संस्कारों, सम्पर्क और अध्ययन के प्रभावों से निर्धारित हुए थे। जिन्हें निम्नानुसार समझा जा सकता है –

1. संस्कार जन्य प्रभाव

गाँधी को दृढ़ प्रतिज्ञता, सत्यनिष्ठा और कष्ट सहने की तत्परता आदि गुण विरासत में मिले थे। उनके पिता श्री कर्मचन्द गाँधी सत्यप्रिय और उदार थे। न्याय में उनकी गहरी निष्ठा थी। विभिन्न रियासतों के दीवान के पद पर कार्य करते हुए वे अपने दायित्वों का दृढ़ता और ईमानदारी से निर्वाह करते थे।

गाँधी की माँ पुतली बाई धार्मिक प्रवृति की महिला थी। धार्मिक विषयों में उनकी निष्ठा और नियम–बद्धता अडिग रहती थी। वे व्रत उपवास आदि में काफी रूचि रखती थी। चातुर्मास में वे व्रत रखती थीं तथा सूर्य के दर्षन किये बिना वे अन्न का कण ग्रहण नहीं करती थी। अपनी मां से गाँधी ने कर्त्तव्य परायणता, धार्मिक प्रवृति संकल्पषीलता और सहिष्णुता आदि गुण ग्रहण किये।

2. बाल्यकाल का परिवेष

गाँधी का लालन–पालन धार्मिक वातावरण में हुआ था। बचपन में देखे गये नाटक श्रवण पितृभक्ति का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गाँधी ने अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया है कि श्रवण की कथा का वह दृष्य, देखकर जिसमें वह अपने माता पिता को कांवड़ में बिठाकर यात्रा पर ले जाता है, का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके मन में यह इच्छा उन्पन्न होती थी कि उन्हें श्रवण के समान बनना चाहिये।

3. धार्मिक साहित्य का प्रभाव

गाँधीजी पूर्ण रूप से धार्मिक व्यक्ति है, अध्यात्मक उनका प्रिय विषय है। इसी कारण उनके विचार, भावनाएँ तथा कार्य धार्मिक भावनाओं से ओत–प्रोत हैं। उनमें धार्मिक भावनाओं का विकास पूर्व व पष्चिम के ग्रन्थों के अध्ययन से हुआ। पंतजलि के योग सूत्र का अध्ययन उन्होंने 1903 में अफ्रीका के जोहन्सबर्ग जेल में कर लिया था। उन्होंने उपनिषदों का गहरा अध्ययन किया था। अपरिग्रह तथा त्याग जैसे व्रतों को उन्होंने उपनिषदों से प्राप्त किया। वेदों तथा रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य का प्रभाव भी उन पर अत्यधिक है। गाँधीजी ने कर्म पर जो बल दिया है, वह गीता की देन है। गीता का यह वाक्य कि श्व्यक्ति को काम करने का अधिकार है, उसे उसके परिणाम पर अधिकार नहींश उनके जीवन की क्रियाओं का आधार बन गया। गीता की षिक्षाओं के कारण गाँधीजी स्वार्थहीन कर्मयोगी बने, जिन्हें सफलता खुषी से पागल नहीं करती और असफलता निराष नहीं करती। उन्होंने गीता से भय, घृणा, शत्रुता और अहम् को त्यागने की भावना ग्रहण की। सत्यरूपी ज्ञान भी उन्हें गीता से प्राप्त हुआ।

4. धार्मिक जीवन का प्रभाव

धर्मों के प्रभाव के कारण ही गाँधीजी ने अपने जीवन में 1 सत्यः 2 अहिंसा 3 ब्रह्मचर्यः 4 अस्वादः 5 अस्तेयः 6 अपरिग्रहः 7 अभयः 8 अस्पृष्यता निवारणः 9 शरीरिक श्रमः 10 सर्वधर्मः 11 समभावः 12 स्वदेषी आदि के विचारों को अपनाया।

गाँधीजी के जीवन और विचारों पर धार्मिक ग्रन्थों का अत्यधिक प्रभाव होते हुए भी वे उन पर अन्धविष्वास नहीं करते थे। जो धार्मिक तथ्य उनकी तर्क बुद्धि पर खरे उतरते थे, वे उन्हें ही स्वीकार करते थे। गाँधीजी के शब्दों में, श धार्मिक पुस्तक की किसी बात को मैं तर्क बुद्धि से अधिक महत्व नही देता।श

5. जॉन रस्किन का प्रभाव

गाँधीजी पर जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' और 'क्राउन ऑफ वाइल्ड ऑलिव्स' का अत्यधिक प्रभाव था। गाँधीजी ने सर्वोदय के सिद्धान्त और शारीरिक श्रम के सिद्धान्त को रस्किन से सीखा।

6. हेनरी डेविड थॉरो का प्रभाव

गाँधीजी को थॉरो के इस राजनीतिक विचार ने कि श्जनहित करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ अत्यधिक सहयोग और यदि वे अहित करें, तो असहयोग करोश बहुत प्रभावित किया। थॉरों की पुस्तक 'एस्से ऑन सिविल', 'डिसओबिडियन्स' का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

7. लियो टॉल्स्टाय का प्रभाव

गाँधीजी टॉल्स्टाय के प्रंषसकों में से थे। वे अपने आपको उनका शिष्य मानते थे, जो उनके प्रति बहुत कुछ ऋणी है। टॉल्स्टॉय के नैतिक दर्षन (ईसाई अराजकता) का प्रभाव गाँधीजी पर इतना अधिक था कि उन्होने स्वयं लिखा है कि जब मैंने उनकी पुस्तक ईष्वर का साम्राज्य आपके अन्दर है पढ़ी, तो मेरा संषय और नास्तिकता दूर हो गयी और अहिंसा के प्रति मेरा विष्वास दृढ़ हो गया। अत्याचार और अन्याय का प्रतिरोध शांतिमय तरीकों से कैसे किया जाता है। यह गाँधीजी ने टॉल्स्टाय से सिखा। प्रेम, सहानुभूति और अहिंसा से परिपूर्ण टॉल्स्टाय के नैतिक दर्षन का प्रभाव महात्मा गांधी पर बहुत अधिक पड़ा।

8. सुधारवादी आन्दोलनों का प्रभाव

भारत में चल रहे सांस्कृतिक, दार्षनिक एवं धार्मिक सुधारवादी आन्दोलनों का प्रभाव गाँधीजी पर पड़ा। रामकृष्ण और विवेकानन्द का प्रभाव उन पर विषेष था। गाँधीजी ने स्वदेष प्रेम और स्वदेषी की भावना इन्हीं से सीखी।

9. सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव

गाँधीजी के विचारों पर भारतीयों की असहाय अवस्था और नंगी गरीबी का प्रभाव था। यही उनके समाजवादी विचारों का आधार है। उड़ीसा के लोगों की गरीबी का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया हैं, उनमें जीवन लुप्त हो रहा था। वे निराषा की जीवित तस्वीरें थीं.... उनकी प्रत्येक पसली गिनी जा सकती थी, प्रत्येक धमनी देखी जा सकती थीः उनके शरीर पर कोई पुट्ठे या चमड़ी नहीं थी... उनके लिए, तो सतत अनिवार्य उपवास था। महात्मा गाँधी ने प्रार्थना सभा को बहुत महत्व दिया। वे नियमित रूप से प्रार्थना सभा में प्रवचन करते थे।

10. दक्षिण अफ्रीकी परिवेष का प्रभाव

दक्षिण अफ्रीका गाँधीजी के प्रयोगों की प्रयोगषाला थी। वहीं पर उनकी धार्मिक चेतना का विकास हुआ। वहाँ पर उन्होंने पष्चिम के लेखकों की विचारधाराओं का अध्ययन किया। वहीं पर उनके राजनीतिक दर्षन का विकास श्वेत जातिवाद के प्रतिरोध में हुआ। वहीं पर उन्होंने अपनी तकनीक (सत्याग्रह) का श्रीगणेष किया तथा उसके प्रारम्भिक प्रयोग भी वहीं किये और वहीं पर उसे परिपक्व बनाया। वहीं पर उनमें निःस्वार्थ मानव–सेवा की भावना पैदा हुई तथा अपने समाज के प्रति कर्तव्यों की अनुभूति हूई। वहीं पर वे राष्ट्रवादी नेता बने तथा उन्होंने श्रमिकों के कार्य को महत्व को समझा।

सारांष में, गाँधीजी एक युग–प्रचेता थे, जिन्होंने राजनीति को नूतन परिवेष दिया। वे आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तकों में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।

संदर्भ :–

1. महात्मा गाँधी आत्म कथा पृष्ठ.1.
2. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खण्ड 78, पृष्ठ 390.
3. जवाहरलाल नेहरू को लिखा पत्र 17 अगस्त 1934.
4. प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेषनः आगरा– डॉ पुखराज जैन,पृष्ठ 144–145.
5. डॉ. मधुकर श्याम चतुर्वेदी–प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक पृष्ठ 378–381.